Preface & Contents

:: राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीत ::

प्रस्तावना - राजस्थान के लोकगीतों पर किये गए पूर्ववर्ती कार्यों का संक्षिप्त विवरण ।
प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता और उपादेयता ।

प्रथम अध्याय :- लोकगीत, परिभाषा, स्वरूप, विकास और वर्गीकरण ।

'लोक' शब्द का व्युत्पत्यर्थ और प्राचीनता,
गीत का शाब्दिक अर्थ, लोकगीत की परिभाषा और स्वरूप,
लोकगीतों का विकास, लोकगीतों का वर्गीकरण ।
लोकगीतों की महत्ता ।

द्वितीय अध्याय :- श्रृंगार: व्याख्या, तत्व, भेद तथा वर्गीकरण ।

'श्रृंगार' शब्द की व्याख्या, श्रृंगार का मूल भाव रति, रसराज ।
श्रृंगार के तत्व - काम, सौंदर्य, प्रेम ।
काम- वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों में काम का स्वरूप, संस्कृत साहित्य में काम का स्वरूप, वात्स्यायन और फ्रायड के काम सम्बन्धी विचार ।
सौंदर्य-व्युत्पत्यर्थ, सौंदर्य की सामान्य विशेषताएं, सौंदर्य के विविध रूप
प्रेम - संस्कृत साहित्य में प्रेम का स्वरूप, हिन्दी साहित्य में प्रेम का स्वरूप, प्रेम के विविध रूप, प्रेम और समाज, प्रेम और साहित्य ।
श्रृंगार के भेद :- संयोग श्रृंगार,
विप्रलंभ श्रृंगार ।
श्रृंगार के आलम्बन-नायक तथा नायिका - संक्षिप्त विवरण ।
श्रृंगारिक लोक गीतों का वर्गीकरण ।

तृतीय अध्याय :- संयोग, श्रृंगार संबंधी राजस्थान के लोकगीत ।

संयोग श्रृंगार के लोकगीतों का सामान्य विवेचन,
संयोग श्रृंगार के लोकगीतों में नायक, नायिका तथा अन्य ।
संयोग श्रृंगार के लोकगीतों में प्रकृति चित्रण ।

चतुर्थ अध्याय :- विप्रलंभ श्रृंगार संबंधी राजस्थान के लोकगीत ।

विप्रलंभ-श्रृंगार के लोकगीतों का सामान्य विवेचन,
विप्रलंभ श्रृंगार के लोकगीतों में नायक, नायिका तथा अन्य,
विप्रलंभ श्रृंगार के लोकगीतों में प्रकृति चित्रण ।

पंचम अध्याय :- राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों में समाज और संस्कृति ।

सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन, विभिन्न संस्कारों,
उत्सवों तथा त्यौहारों का संक्षिप्त वर्णन ।
लोकगीतों में संगीत और नृत्य - विविध प्रकार ।
लोकगीतों में स्थानीयता - स्थानीय विशिष्टताएं ।

षष्ठ अध्याय :- राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों की कला और शिल्प की दृष्टि से विवेचना ।

भाव-सौष्ठव, रूप-सौंदर्य, अभिव्यंजना, अलंकार,
छंद, शैली विधान, काव्य रूढ़ियाँ, रस ।

सप्तम अध्याय :- राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों का विविध पक्षों से महत्व तथा उपसंहार ।

सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय तथा कलात्मक महत्व ।

उपसंहार ।

परिशिष्ट :- प्रमुख श्रृंगारिक लोकगीतों का संकलन ।

सहायक ग्रंथों की सूची ।

हिंदी और राजस्थानी के ग्रंथ
संस्कृत-ग्रंथ
अंग्रेजी-ग्रंथ
पत्र-पत्रिकायें